वह परमेश्वर जिसके लिए हम बनाए गए थे

अच्छा, सभी को शुभ संध्या।
मुझे हम सभी को इकट्ठा लाने दें।

मैं आशा करता हूँ वह मददगार रहा,
मैं आशा करता हूँ आप अपने आपके

कुछ प्रश्नों के उत्तर पाने की शुरुवात कर चुके हैं।

परंतु मैंने सोचा यह समय अच्छा
होगा इकट्ठा होने

और इस सप्ताह के बड़े विषय पर
लक्ष्य केंद्रित करने के लिए,

और इस सप्ताह हम देखने जा रहे हैं,
'परमेश्वर जिसके लिए हम बनाए गए थे'।

और मैंने सोचा इस रात आपको एक
साधारण सा प्रश्न पूछकर शुरुवात करें।

अच्छा, आप तैयार हैं? दिमाग काम कर रहें है?
साधारण, साधारण प्रश्न।

अगर आपको एक चुनाव दिया जाए

एक बड़ी नीली व्हेल को
महासागर में देखने जाने का,

या एक विशाल नीली व्हेल को
समुद्र तट पर फंसे देखने का,

पता है, आप क्या चुनाव करेंगे?
अच्छा आपको व्हेल मिल गई है।

आप व्हेल दिखाने वाली नाव पर जा सकते हैं,
वह सागर में है,

या आप जाकर व्हेल को समुद्र तट पर पड़ा देख सकते हैं।
आप क्या चुनना चाहेंगे?

आप क्या करना पसंद करेंगे?
महासागर में, बिलकुल, आप जाना चाहेंगे

महासागर को चुनेंगे। क्यों? क्योंकि...

© Lee McMunn, 2011

यह सिर्फ बड़ी नीली व्हेल नहीं, यह सिर्फ
महासागर मे नहीं, परंतु जब आप

किसी प्राणी को उसके पर्यावरण में देखते हैं
जहाँ उसे होना चाहिए,

वह शानदार होता है, है ना? अगर
आप जाकर बड़ी नीली व्हेल को महासागर में देखेंगे,

आप उसे पानी के ऊपर कूदता देखेंगे,
तैरते हुए देखेंगे....यह शानदार लगता है।

समुद्र तट पर, जहाँ होने के लिए
उसे कभी बनाया ही नहीं गया था,

और इसलिए यह थोड़ा सा
अजीब लगता है,

परंतु महसागर में, उसके प्राकृतिक पर्यावरण में,
वह बढ़ियां लगता है।

अब, मैंने आपको यह क्यों बताया?
क्योंकि दो हजार वर्ष पहले

जब यीशु जीवित थे, उन्होंने दावा किया की
आप और मैं, हर एक मनुष्य,

इस तरह बनाएँ गए हैं कि हमें परमेश्वर की जरूरत है।
हम निर्माण किए गए हैं, कृपया ध्यान दें,

एक विशेष पर्यावरण मे होने के लिए, की अगर हम वहाँ हैं,
अगर हम उसमे जीएँ, तो हम सफल होंगे।

और वह पर्यावरण है परमेश्वर की दुनिया में रहना
और परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना।

अगर हमारे पास वह विश्ता है,
तो हम सफल रहेंगे।

और आज रात मैं आपके
यही दिखाना चाहता हूँ

यूहन्ना अध्याय 6 से। तो अगर आपके
पास अपनी-अपनी यूहन्ना के सुसमाचार की प्रतियाँ है

© Lee McMunn, 2011

तो क्यों ना उसे लें?
और यह आपके लिए काफी मददगार होगा अगर आप

यूहन्ना अध्याय 6 की ओर पलटें, और अगर आप
आयत 25 को खोज सकें।

और मैं आपके लिए वचन 25 से 35 तक
पढ़ना चाहता हूँ।

अब, मनुष्यों का एक झुंड
यीशु को खोज रहा है,

और आयत 25 में हमें यह बताया जाता हैः

"झील के पार जब वे
उससे मिले तो कहा,

'हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?'
यीशु ने उन्हे उत्तर दिया, 'मैं तुम से सच कहता हूँ

तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ते हो
कि तुम ने आश्चर्य देखे

परंतु इसलिए कि तुम
रोटियाँ खाकर तृप्त हुए।

नाशवान भोजन के लिए परिश्रम न करो,
परंतु उस भोजन के लिए जो अनंत जीवन तक ठहरता है

जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा।

क्योंकि पिता अर्थात परमेश्वर ने
उसी पर छाप लगाई है।'

उन्होंने उससे कहा, 'परमेश्वर के कार्य
करने के लिए हम क्या करें?'

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया,
'परमेश्वर का कार्य यह हैः

कि तुम उस पर, जिसे उसने भेजा है,
विश्वास करो।' तब उन्होंने उससे कहा

'फिर तू कौन सा चिन्ह दिखाता है कि हम
उसे देखकर तेरा विश्वास करें?

© Lee McMunn, 2011

तू कौन सा काम दिखाता है?
हमारे बापदादों ने निर्जन में मन्ना खाया;

जैसा लिखा है, "उसने उन्हें खाने के लिए
स्वर्ग से रोटी दी।"'

यीशु ने उनसे कहा,
'मैं तुम से सच सच कहता हूँ,

कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी
स्वर्ग से न दी,

परंतु मेरा पिता तुम्हे
सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है।

क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है
जो स्वर्ग से उतरकर

जगत को जीवन देती है।'

'हे प्रभु,' तब उन्होंने उससे कहा,
'यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर।'

यीशु ने उनसे कहा, 'जीवन की रोटी मैं हूँ
जो मेरे पास आता है

वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर
विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा।'"

अब, आज रात हम यीशु के
जीवन बदल देनेवाले दावे पर लक्ष्य केंद्रित करेंगे

की वह जीवन की रोटी है। और यह जीवन बदल देनेवाला
है अगर आप इसे सचमुच समझ सकें।

परंतु उसके पहले, मैंने सोचा की हमें
कहानी पर गौर करना चाहिए,

और मैं साथ-ही-साथ आपको कुछ सचमुच महत्वपूर्ण
चीज़ें दिखाऊँगा जो हमें बताई गई हैं ।

अब, जो पहली बात मैं आपको बताना चाहता हूँ,
और जिसका महत्व आपके सामने लाना चाहता हूँ

वह यह है की यीशु ने उस लोगों की भीड़ से क्या कहा
जिन्होंने उसे आयत 25 में खोजा।

© Lee McMunn, 2011

यह लोगों की भीड़ ने, एक दिन पहले,
यीशु ने जो अद्भुत चमत्कार किया देखा था।

सिर्फ पाँच रोटियाँ और
दो छोटी मछलियों से

उसने पाँच हजार से ज्यादा भीड़
को खाना खिलाया था।

अब, यह देखना बड़े आश्चर्य कि बात रही होगी,
और यह भीड़, दूसरे दिन,

यीशु को खोजने के लिए व्याकुल है।
और वह उसको ढूँढ लेते है,

परंतु सुनिए...मुझे यह अच्छा लगता है।
यीशु आयत 26 में क्या कहते हैं सुनेः

"यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुम से सच कहता हूँ,
तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ते हो,

कि तुम ने आश्चर्यकार्य देखे

परंतु इसलिए कि तुम
रोटियाँ खाकर तृप्त हुए।'"

अब, ध्यान देने कि सबसे महत्वपूर्ण बात
यह हैं की यीशु

पिछले दिन किए हुए चमत्कार का वर्णन कैसे करते हैं।
वे उस चमत्कार का वर्णन कैसे करते हैं?

वह उसे क्या कहते हैं? अच्छा, सिर्फ एक चमत्कार नहीः
वह उसे एक चमत्कारिक चिन्ह कहते हैं।

अब, ऐसा क्यो है?
अच्छा, हम सब जानते हैं की चिन्ह क्या है।

एक चिन्ह वह होता है जो किसी और चीज़
कि ओर इशारा करता है।

यह कहानी का अंत नहीं है, है क्या?
चिन्ह अपने आप में कोई बड़ी बात नहीं।

वह आपको एक विशेष दिशा कि ओर इशारा करता है।

© Lee McMunn, 2011

अब, यह भीड़ बड़ी व्याकुलता से
यीशु को खोज रही थी।

क्योंकि उन्होंने उसे कई सारी रोटियों
को बाँटते देखा हुआ था।

परंतु यीशु कहते है, पता है,
की यह सिर्फ एक चमत्कारी चिन्ह है।

यह कहानी का अंत नहीं।
यह कोई बड़ी बात नहीं।

परंतु यह भीड़... वे यीशु को ढूंढ़ने के लिए व्याकुल थे
क्योंकि उन्होंने सोचा

की यह बड़ी बात है। परंतु उसकी वजह से
जो सचमुच यीशु दे रहा था उसे

पाने से चूक रहे थे।

आप देखते हैं, उन्हें चाहिए था कि वे
चिन्ह की ओर देखते और सोचते

'यह हमें यीशु की पहचान के बारे में
क्या सिखा रहा है?'

अब, यीशु चाहता था की वे जानें की
वही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा था,

वह प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा जो इस
दुनिया में आने वाला था।

यही वह चिन्ह दर्शा रहा था।
परंतु उन्हें सिर्फ रोटियाँ अच्छी लगी,

परंतु यीशु नहीं चाहते हैं के वे केवल इसी से संतुष्ट हो जाएं
जब इससे कई ज्यादा उन्हें उपलब्ध हो रहा था।

अब, क्या आप यह सोच सकते हैं?
आपका कोई पारिवारिक मित्र है

और आप उनसे मिलते है और वे कहते है,
'हम छुट्टियों पर जानेवाले हैं।'

और आप कहते हैं, 'यह तो बहुत बढ़िया है।
आप कहाँ जाने वाले हैं? '

© Lee McMunn, 2011

और वे कहते हैं,
'हम समुंद्र किनारे जा रहे हैं।'

अब, ब्रिटिश समुद्र किनारे की छुट्टियों से बेहतर
क्या हो सकता है?

यह बहुत अच्छा होगा, है कि नहीं ?

अब, हमारा स्थानिक समुद्र किनारा कहाँ हैं?
वह कहाँ से जा सकते....वह कहाँ जाते?

ब्रिडलिंगटन, ठिक है?
यह लोकप्रीय चुनाव है।

वह ब्रिड़लिंगटन के लिए चल पड़े हैं।
आप सोचते है, 'बेहतरीन! बढ़ियां समय गुजारिए।'

तो आप उन्हे अलविदा कहते हैं, वे जा रहे हैं,
उनकी पारिवारिक कार में, और वे लुप्त हो जाते है।

अब, आप एक दिन के लिए बाहर जाते हैं,
और आप देहात के रास्तों पर गाड़ी चला रहें हैं,

और आप कुछ दूरी पर देखते है...
आप उनकी कार देखते हैं।

और वे शायद, पता है,
की रास्ते के किनारे रुकें हैं

जहाँ एक चिन्ह है जो कहता है 'ब्रिडलिंगटन'।

और यह थोड़ा अजीब है, सच में,
क्योंकि वह सारा परिवार बाहर है, पता है,

माता और पिता, उनके बच्चे वहाँ है,
और उनका टेबल लगा हुआ है,

और वहाँ तंदुर भी लगाया हुआ है,
और लगता है की वे रात का भोजन कर रहें हैं।

आप सोचते हैं,
'यह थोड़ा अजीब है, है ना?'

तो आप कार को एक तरफ रोकते हैं
और आप सोचते हैं, 'ठीक है?'

© Lee McMunn, 2011

और वे कहते हैं, 'हाँ, हम यहाँ
अच्छा समय बिता रहें हैं।' और आप कहते हैं,

'मैंने सोचा आप
ब्रिडलिंगटन जा रहें हैं।'

'अच्छा, हम वहीं हैं, देखो,
वह चिन्ह कहता है, है ना?'

अब, आप क्या करेंगे? क्या आप कहेंगे,
'अपनी छुट्टियों का आनंद लीजिए'?

नहीं। आप कहेंगे, 'नहीं, यह चिन्ह हैं।

आप अभी तक नहीं पहुँचे। यह तो संकेत है।
ब्रिडलिंगटन उस दिशा में हैं।

कार में बैठीए और आगे बढ़िए।

रास्ते के किनारे चिन्ह के पास
भोजन करके ही संतुष्ट ना हों।

यह कोई बड़ी बात नहीं है।'

अब, आप देखिए कि यीशु क्या कर रहें हैं।
इस समूह के लोग चिन्ह से,

भोजन से इतने जुडें हैं,
कि वे यीशु उन्हे जो

सचमुच देना चाहता है उसे खो रहे हैं।
अब, प्रश्न यह है,

वह उन्हे क्या देना चाहता है?
अच्छा, आयद 27 को देखें। यीशु कहते हैः

"नाशवान भोजन के लिए परिश्रम न करो,
परंतु उस भोजन के लिए जो आनंत जीवन तक ठहरता है

जिसे मनुष्य का पुत्र" -यह यीशु का
एक और नाम है - "तुम्हें देगा।

क्योंकि पिता अर्थात परमेश्वर ने
उसी पर छाप लगाई है।"

तो यीशु नहीं चाहता की वे उस चीज़ से
चूक जाएँ जो वह उन्हें दे सकता हैं।

© Lee McMunn, 2011

और तुलना क्या है?
नाशवाल अन्न या अनंत अन्न

तो इस भीड़ ने अपना हृदय और मन,
उनका समय और उनकी भक्ति

क्या पाने के लिए लगा दिए? अन्न जो नाशवान है।
अस्थाई अन्न, अन्न जो, अगर आप इसे पाते हैं

तो उसे हमेशा के लिए नहीं रख सकते क्योंकि
वह खराब हो जाएगा, और अन्न अगर आप खाएं भी

अच्छा, तो वह क्षण भर रहेगा
और कुछ देर तक ही आपको शक्ति देगा,

परंतु आपको हमेशा और
अधिक इसकी जरूरत पड़ेगी।

और यह भीड़ जो ज्यादा उत्सुक है,
और यीशु नहीं कहते, 'ओह, उत्सुक ना हों।'

वह नहीं चाहता की वे उदासीन हों।

केवल यही कि उनकी उत्सुकता
गलत दिशा में है।

तो वह नहीं चाहता की वे अपना हृदय और
मन नाशवंत अन्न पर लगाएँ।

वह चाहता हैं की वे यह निश्चित कर लें कि
उनके हाथों में अनंत अन्न आया है।

कुछ अन्न जो यीशु उन्हें देना चाहता है जो
सदा के लिए टिका रहेगा।

अब, यीशु किस बारे में बात कर रहे हैं?

अच्छा, तो वह उन्हें स्वादिष्ट व्यंजन जो उन्होंने कभी
नहीं खाया नहीं देनेवाला था।

वह उन्हें बेहद रुचिपूर्ण भोजन देने का प्रस्ताव
नहीं रख रहा है जो उन्होंने

कभी अपने मुँह में नहीं डाला था। वह
उन्हें सच्चा पोषक अन्न

© Lee McMunn, 2011

गहरे स्तर पर देना चाहता है जिसकी अब शुरुवात है,
और जो सदा तक टिका रहेगा।

अब, प्रश्न यह है,
वह सचमुच क्या देना चाहता है? वह वास्तव में

उन्हे क्या देने का प्रस्ताव रख रहा है?
अच्छा, आओ देखें यदि हम इस बातचीत को समझ सकें

और देखें की हम क्या पाते हैं? आयत 28 को देखें।
वे उसे प्रश्न पूछते हैं।

ठिक है, यह अनंत अन्न ठीक लगता है,
परंतु "हम क्या करें

उन कार्यों को करने के लिए जो परमेश्वर चाहता है?"
दिलचस्प प्रश्न, है ना?

यह उन धार्मिक प्रश्नों में से एक है
जो इस बात से भरे हैं कि

'मुझे क्या हासिल करना है? मुझे कैसे कार्य करना है की
मैं उसके योग्य बन सकूं जो तू मुझे दे सकता है?

मैं कठिन परिश्रम करना चाहता हूँ। मैं कार्य प्रदर्शन करना
चाहता हूं। मैं इस अन्न को पाने के योग्य कैसे बन सकता हूँ?'

और मुझे यीशु की प्रतिक्रिया बड़ी अच्छी लगती हैः
यह ताज़गी से भरी है।

आयत 29 को देखें "यीशु ने उत्तर दिया,
'परमेश्वर का काम यह हैः'"

तैयार? नगाड़ा.... "जिसे उसने भेजा उसपर विश्वास करें।"
तो वह यह नहीं कहता

'आपको यह करना होगाः आपको आपकी
उपलब्धियों का लेखा रखना होगा।

आपको यह करना होगा, यह और यह...'
वह साधारणतया कहता है,

'जैसे आप हैं वैसे ही यीशु के पास आएँ
और उसको अपना अधिकार दें।'

© Lee McMunn, 2011

यही इसका मतलब है
यीशु में विश्वास करना।

अब, इस वक्त तक भी हम यह नहीं
जानते की वह उपहार क्या है।

हम जानते हैं की यीशु
एक बढ़ियां उपहार का प्रस्ताव दे रहा है

और हमें कोशिश करके उसपर
अपने हाथ जमा लेने चाहिए।

परंतु प्रश्न यह है, यह उपहार क्या है

जिसका प्रस्ताव वह रखता है?
अच्छा, हमें बताया गया है

आयत 30 से 35 में। तो आओ हम उसे देखें।
आएँ हम उस कहानी को देखें। आयत 30।

भीड़ ने यीशु से एक चमत्कार प्रदर्शन
करने के लिए कहा। वे कहते हैं,

'फिर तू कौनसा चिन्ह दिखाएगा कि हम
उसे देखकर तेरा विश्वास करें? '

तो इस भीड़ के पास उनकी
यहूदी इतिहास की पुस्तकें खुली है।

वे यहूदी लोगों के इतिहास के
उस समय को याद करते हैं।

जब वे मरुभूमि में थे मूसा नाम के एक
व्यक्ति की अगुवाई के नीचे।

और मूसा ने, उन्होंने सोचा,
उन लोगों को तृप्त किया था

और उसने चमत्कारिक चिन्हों के द्वारा अपनी
अगुवाई का प्रदर्शन किया था।

और इसलिए वे यीशु से कहते है, 'ठीक है, फिर।
आप क्या करने जा रहे है?'

अब यह मुझे अद्भुत लगता है,
क्योंकि सिर्फ एक दिन पहले क्या हुआ था?

© Lee McMunn, 2011

उसने कुछ रोटियाँ और दो मछलियों
से पाँच हजार लोगों को तृप्त किया था,

परंतु वे एक और
चमत्कारी चिन्ह चाहते हैं।

परंतु देखें कि आयत 32 में
यीशु उनसे क्या कहते हैं,

क्योंकि उन्होंने गलत
तुलना की।

वे यीशु की तुलना मूसा से करने की कोशिश कर रहे हैं,
परंतु यह गलत तुलना है।

यीशु कहते हैं, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ,

मूसा ने तुम्हें वह रोटी
स्वर्ग से न दी,

परंतु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी
स्वर्ग से देता है।

क्योंकि परमेश्वर की रोटी, वही है
जो स्वर्ग से उतरकर

जगत को जीवन देती है।"

तो सही तुलना होनी चाहिए उस विशेष रोटी, जिससे तब
लोग तृप्त हुए थे, में

और यीशु में, जो एक विशेष व्यक्ति के रूप में एक सच्चा,
गहरा जीवन

लोगों को आज दे सकते हैं। परमेश्वर की रोटी,
अगर आप ध्यान दें तो, व्यक्तिगत हैं।

लोगों को सचमुच इस में से कुछ चाहिए,
और यीशु इसे बिलकुल स्पष्ट कर देते हैं की

वह किस के बारे में कह रहे हैं।
और यह हमें आयत 35 के बड़े दावे तक लाती हैः

"यीशु ने उनसे कहा,
'जीवन की रोटी मैं हू।

जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा,

© Lee McMunn, 2011

और जो मुझ पर विश्वास करता
है वह कभी प्यासा न होगा।'"

देखिए वह इस मुकाम पर पहुंच चुका है और
हम क्या पाते हैं?

अच्छा, हम जानते हैं की उपहार और उपहार
देनेवाला दोनों एक ही हैं। क्या आप इसे देखते हैं?

महान देनेवाला अपने-आप को ही बड़े उपहार के
रूप में देता है। वह जीवन की रोटी है।

मुझे नहीं पता यदि आपने कभी
इस के बारे में सोचा भी है, परंतु यीशु

क्यों अपने आप को जीवन की रोटी कहता है?

वह खुद को जीवन के मछली के अंडे क्यों नहीं कहता?
कभी इसके बारे मे सोचा है?

नहीं मैं नहीं जानता की मछली के अंडे आपके
घर का नियमित आहार है या नहीं,

परंतु यह हमारे घर में निश्तित ही नहीं है।
मैं आपसे यह सीधे-सीधे कहता हूँ।

हमारी अल्मारियों में मछली के अंडे बिल्कुल
भी नहीं होते। ऐसा क्यों?

क्योंकि यीशु के दिनों की संस्कृति में,
जैसे की आज कि कई संस्कृतियों में

रोटी कोई भोग-विलास कि चीज़ नहीं है।
रोटी जीवन के लिए आवश्यक हैं।

और यीशु यह दावा करते हैं की आप और मैं,
हक एक व्यक्ति,

इस जरूरत के लिए बनाया गया है जो वह दे सकता है।
वह है, हमे बनाया गया है ताकि हमें उसकी जरूरत हो।

मूल रूप से, हम में से प्रत्येक जन के अंदर गहराइयों मे
कुछ जरूरतें और इच्छाएँ होती है,

जो सिर्फ परमेश्वर पूरी कर सकता है।
हमें निर्माण किया गया है कि हमें परमेश्वर की जरूरत हो,

© Lee McMunn, 2011

और सिर्फ यीशु के साथ संबंध
ही हमें सचमुच उस परमेश्वर के साथ पुनः जोड़ सकता है

जिसने हमें बनाया है।

अब, मुझे कोशिश करने दें और इसके मतलब
को विस्तार से बताने दें।

किस तरह की जरूरतें और इच्छाएँ
हमारे अंदर बुनी हुई है,

जो सिर्फ परमेश्वर ही पूरी कर सकता हैं?
अच्छा, मुझे चार का वर्णन करने दें।

सबसे पहले, सुरक्षा की जरूरत।
भविष्य कितना अनिश्चित नहीं,

और मनुष्य जाती में सुरक्षित होने की
यह अंदरूनी इच्छा दिखाई देती है,

सुरक्षित होने की जरूरत।
मैं सोचता हूँ यह उन में से एक है।

ज़रूरत, दूसरी, सुख।

हम यह जानते हैं, है ना? हम आनंद और गहरे,
अनंत सुख के लीए प्रयत्न करते हैं।

यह हमारे अंदर लगभग बुनी हुइ ज़रूरत है,
आनंद और सुख के लिए।

तीसरी, प्रभावी होने की ज़रूरत।
आप जानते है जैसे की मैं जानता हूं,

वह इच्छा और वह ज़रूरत कुछ महत्व रखने की,
किसी योग्य होने की,

मायने रखने की। नज़र में आने की।
महत्वपूर्ण होने कि।

और चौथा, मैं आपकी ओर संकेत हूँ,
बहुत प्यार किए जाने की ज़रूरत।

और यह ज़रूरतें हमारे अंदर बनी होती हैं,
परमेश्वर द्वारा हमारे अंदर बुनी गई हैं,

© Lee McMunn, 2011

और यीशु यह दावा कर रहे हैं की सिर्फ वो ही इन
जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

और तोभी यहाँ एक समस्या हैः जब परमेश्वर यहाँ
नहीं होता, जब परमेश्वर हमारे जीवन में नहीं होता,

उन इच्छाओं का क्या होता है?
उन ज़रूरतों का क्या होता है?

क्या वह अचानक...लुप्त हो जाते हैं?
बिलकुल भी नहीं। परमेश्वर शायद वहाँ नहीं होगा,

परंतु वह गहरी इच्छाएँ अब भी वहाँ होती हैं,

और हम उन जरूरतों को पूरा करने के लिए
अन्य जगहों में कोशिश करते हैं।

हम वह खोजते हैं जिसे मैं कहता हूँ
परमेश्वर के बदले मे।

अब, परमेश्वर के बदले मे क्या है? एक परमेश्वर
के बदले मे कुछ भी या कोई भी हो सकता है।

धन को लें, लोग धन के लिए क्यों तरसते हैं?

अच्छा, कुछ लोगों के लिए वह उनकी सुरक्षा
के लिए होता है जो उनकी इच्छा होती है।

वह सोचते हैं पैसा,
अगर उनके पास बहुत होगा।

तो वह भविष्य के लिए निश्चितता जरूर उपलब्ध कराएगा।

कुछ लोगों के लिए है कि
जो पैसा उनके लिए खरीद सकता है।

और वे इस तरह वह सारी चीज़े हासिल कर सकते हैं
जिनके बारे में वे सोचते हैं, यदि वे कर सकें तो

और पा सकें तो,
यह उन्हें बहुत आनंद देगा।

तो पैसा परमेश्वर के बदले मे हो जाता है।

या और भी कई उदाहरण है।
आप करियर के बारे में सोचते हैं।

© Lee McMunn, 2011

वह समय और श्रम जो लोग उनके
काम या नौकरी में लगाते हैं,

और बहुत से कारणों के लिए।
कुछ लोग, वे सोचते है

'अच्छा, अगर मैं सचमुच यह तरक्की पाऊँ
और यह करूँ या वह करूँ,

अच्छा, तब आनंद आ जाएगा।

या शायद मेरा परिवार उसकी प्रशंसा करेगा
जो मैने किया है,

या मैं जाना जाऊँगा कि मैने
कोई महत्वपूर्ण योगदान दिया है।'

या यह कुछ और भी हो सकता है।
यह दूसरे मनुष्य के साथ संबंध भी हो सकता है।

बेइंतहां प्यार किए जाने की ज़रूरत।

हम कितने ऐसे लोगों को देखते हैं
जो दूसरे मनुष्यों की ओर ताकते हैं

अपनी जरूरत को पूरा करने कि कोशिश के लिए?

और यह भी, इसके बारे में क्या?
हमारे स्वरूप और सुंदरता के बारे में?

कुछ लोग इतने सही दिखने या सही कपड़े पहनने के
बहुत आदि हो चुके हैं क्योंकि

हमारी संस्कृति के बहुत सारे लोगों
को यह बताया गया है

की अगर आप के पास यह मायावी सुंदरता
या यह स्वरूप होगा

तो आप अच्छा महसूस करेंगे और आप
प्रभावी और योग्य होंगे।

परमेश्वर के बदले मे कुछ भी
या कोई भी हो सकता है।

और बहुत सारे लोगों के तो
एक से ज्यादा होते हैं, है ना?

© Lee McMunn, 2011

मेरा मतलब है, हम हमारे जीवन को
परमेश्वर के बदले कई सारी चीज़ो से भर लेते हैं

उन विभिन्न ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश में।

परंतु मुझे परमेश्वर के बदले मे के
बारे में आपको कुछ चीज़ें बताने दें।

पहली चीज़ जो मैं परमेश्वर के बदले में
के बारे में आपको बताना पसंद करूँगा

वे हमारी भिन्न जरूरतों को पूरा करने
के लिए कभी नहीं बनाए गए थे।

और इस के कारण ऐसा होता है कि
हम थोड़े मे ही संतोष कर लेते हैं।

परमेश्वर कोई बड़ा मज़ा किरकिरा करने वाला नहीं है जो
हमारे दिन को बरबाद और हमारे आनंद को खराब करता है।

परंतु अगर आप खुद को परमेश्वर के
बदले में में डाल देंगे,

यह कभी हमे वह सुख देने के लिए नहीं बनाया गया
जिसकी हम कामना करते हैं,

वह बहुत सारे लोग अंत मे थोड़े मे ही संतोष कर लेते हैं।

और जो दूसरी चीज़ होती है जब हम अपने-आप को
परमेश्वर के बदले में डालते है

वह है हम अंत मे परमेश्वर के अच्छे उपहार को
बर्बाद करते और उसका नाश कर देते हैं।

मैं सोचता हूँ की यह सच है जब लोग
उस बेइंतहा प्यार को

दूसरे मनुष्यों में खोजते हैं।

तो हमारी व्यवस्था में बुने हुए इस प्रेम को
सिर्फ परमेश्वर पूरा कर सकता है,

परंतु क्या होता है? बहुत सारे लोग सोचते है, 'अच्छा,
मेरा जो अगला रिश्ता होगा,

अच्छा, वह मेरे बेइंतहा प्रेम पाने की
ज़रूरत को पूरा करेगा।'

© Lee McMunn, 2011

परंतु वह रिश्ता कभी उस भार को
जो लोग उस पर डालते हैं

सहन करने के लिए नहीं बनाया गया था।
और होता क्या है? वह कट जाता है। वह टूटता जाता है।

अब, परमेश्वर के बदले मे रखी चीज़े हमारे साथ
यही करती हैं। परंतु क्या आपने कभी पूछा है..

परमेश्वर के बारे में क्या? परमेश्वर कैसे महसूस करता है
जब हम इन उसके बदले मे कि चीज़ो के पीछे भागते हैं?

क्या परमेश्वर इससे खुश है?

ठीक है, तो बाइबल हमें बताती है की परमेश्वर कैसे इस
सब से संबंध रखता है, वह है एक क्रोधित प्रेमी की तरह।

अगर आप एक शादीशुदा पती और
पत्नी के बारे में सोचते हैं,

और पत्नी जाकर अन्य व्यक्त
के साथ व्यभिचार करती है,

तो पती की प्रतिक्रिया कैसी होगा? क्या वह खुश है?
क्या वह मुस्कुराएगा? बिलकुल नहीं!

वह उससे क्रोधित होगा। और क्या उसे क्रोधित होने का
अधिकार है? हाँ, बिलकुल है।

और तोभी यह महान खबर है जो हमने
पिछले कुछ सप्ताहों में पहचान पर देखी।

की परमेश्वर ने इस जगत से इतना प्रेम रखा की
यीशु को इस बड़े छुटकारे के मिशन पर भेजा

ताकि वह सब कुछ जो
आवश्यक है वह कर सके

हमें सच्चे और जीवित परमेश्वर
के रिश्ते में लाने के लिए।

और जब वह यहाँ है, वह क्या कहता है?
“मैं जीवन की रोटी हूँ।”

अब, मेरा आखरी प्रश्न, उसके बाद मैं
आपको आपके समूहों में वापस भेज दूँगा।

© Lee McMunn, 2011

कब रोटी ने आपकी कुछ भलाई की है?
इस के बारे में सोचिए, ठीक हैं?

मैं यहाँ हूँ, आप मेरी कल्पना कर सकते हैं
रोटी का टुकड़ा पकड़े हुए।

अब, आप इस रोटी के टुकड़े के साथ क्या कर सकते हैं?
आप उसे रात भर घूर सकते हैं।

क्या यह उत्तेजक होगा?
क्या आप ऐसा करना चाहेंगे?

आप रोटी की ओर देख रहें हैं।
क्या यह आपकी कुछ भलाई करेगी? नहीं।

आप इसे जमा कर के रख सकते है,
आप इसे अलमारी में रख सकते हैं

और हर रात उसे बाहर निकाल सकते हैं,
और सोच सकते हैं, 'वाह! इसे देखिए। यह रोटी है।'

क्या यह आपकी कुछ भलाई करेगा?
बिलकुल नहीं।

क्योंकि रोटी को आपकी कुछ भलाई करने के लिए,
आप को इसे खाना होगा।

और यही वह बताने का तरीका है
कि यीशु में विश्वास करने का अर्थ क्या है।

यह उसमें कार्यरत विश्वास है, जहाँ हम जैसे हैं उसके
पास आतें हैं और उसे अपना अधिकार देते हैं।

और जब हम ऐसा करते हैं, यीशु कहते हैं,
'मैं वादा करता हूँ,

एक गहरे स्तर पर, आप की भूख संतुष्ट की जाएगी।'

ठीक है, मैं आपको आपके समूहों में वापस भेजने जा
रहा हूँ ताकी आप इसके बारे में बातचीत करें।

देखें की आप इसका क्या सार निकालते हैं,
और फिर कुछ ही मिनिटों में मैं उठुंगा

और आज रात के बड़े प्रश्न का उत्तर दूँगा।
तो, शुरु हो जाइए। देखें की आप इसे कैसे करते हैं।

© Lee McMunn, 2011

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com